

बच्चों को नालूम है मनुष्य जो भी सुनते हैं वह किंचड़ा। इसलिये भगवान कहते हैं हियर नौ किंचड़ा, सी नौ किंचड़ा, टाक नौ किंचड़ा। कोई भी १२ मनुष्य सुनते हैं। हे तो मनुष्य के ना। तुम्हको तो सुनाने वाला निराकार परमापिता परमात्मा है। तुम सुनते हो धारण करते हो औरों को सुनते हो। वाप ने सुनाया है यह भक्ति प्रार्थना का किंचड़ा न सुनो। सुनाने वाले मिलते हैं तो सुनना भी है परन्तु सुनते हुये भी न सुनो। जानते हैं तपोप्रधान वाले ही सुनावेंगे। तुम जानते हो हम जो कुछ सुनते हैं वह दूसरा कोई मनुष्य सुना न सके। सुनाने वाला एक वाप ही है। कहते हैं ब्रह्मा को भगवान कहते हो। बोलो नहीं। क हम तो कहते हैं मनुष्य कब भगवान हो नहीं सकता। तुम ब्रह्मा को जानते नहीं हो। ब्रह्मा पतित है। आइ ऐ देखो तपेष्ठान मैं छड़ा है। बहुत जन्मों के अन्त मैं, तो क्या हुआ। धोड़ा धीर्घ से सुनो। हम ब्रह्मा को देवता भी नहीं कहते। उनको भगवान ही कहते हैं। यह वाप समझते हैं जिस मैं प्रदेश किया है यह उनके बहुत अ जन्मों के अन्त का शरीर है। ब्रह्मा नहीं तो कहां से आये। यह पतित पावन बनते हैं तो देवता बनते हैं। हम भी पतित हैं तो और अ के सभी दुनिया भी पतित हैं ऐसे यह भी पतित हैं। बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है इनका। ब्रह्मा जर चाहे र जिस द्वासा ब्राह्मण रक्षास्त्र रडाप्ट होते हैं। ब्राह्मण पर देवता बनेंगे। मनुष्य समझते नहीं। उनको छड़ा होकर समझाना चाहिए। यह नम्दरदन पतित है। हमको श्रीकृष्ण मिलती है यह बहुत अ जन्मों के अन्त का जन्म है। सो तो पतित ठहरा ना। हम भी ब्रह्माकुमास्कुम्भीर्यां हैं। कुमस्कुम्भार्यां लहने पर झिनल आई ढंढी हो जातो है। ऐसे भी वाप कहते हैं आई२ सज्जो। तो शरीर ज्ञ भान न रहेगा। कौलयुग मैं सभी है तपोप्रधान मनुष्य। परन्तु मनुष्य अपन को तपोप्रधान समझते थोड़ेहीहैं। तुम हो अब संग्रह गुग पर। चित्र ते जाना चाहिए। आइ ऐ कितना तीय है। कोई भी सन्यासी हो, वड़ा गुरु हो। ऐसे मनुष्य ठहरा ना। हठयोग को भी भावेत कहेंगे। आधा कल्प है वे ही भावेत कल्प। भक्ति से दुग्धीत। मनुष्यों को तो कुछ भी ज्ञान है नहीं। सभी तपोप्रधान हैं। तुम वच्चे जानते हो ब्रह्मण ही झानो वच्चे हैं। जो कुछ भी सुनते हैं वह मनुष्य ही सुनते हैं। शास्त्रों का ज्ञान सुनते हैं। कुछ न कुछ अपनी ज्ञ से सुनते हैं। वह हो हो मनुष्यभत। तुम्हरी है ईश्वरीभत। सदगति के लिये मत सिफ एक वाप के एस ही होतीहैं। ऐसे मल कितने भी हैं पर गी शुद्ध सम्प्रदाय पतित हैं। वैश्यसम्प्रदाय भी नहीं है। मल व्यापरों व करते हैं परन्तु वैश्य कुल का नाम हो जाता है। कौलयुग मैं हो ही शुद्ध। पहरा हो सारा कौलयुग का है। सभी हैं शुद्ध सम्प्रदाय। इस ज्ञान को मनुष्यनहीं जानते हैं। तुम अभी अपन को मनुष्य नहीं रह समझते हो। वाप हम अह्याओं को सुनते हैं। तुम समझते हो ईश्वर सर्वव्यापी होता नहीं। आत्मा सभी है उस अह्या मैं पर सर्वव्यापी विकास है। तो यह वाप ही समझते हैं। मनुष्य की वाते सुनते हैं पर ध्यान नहीं। बाबा कब ध्यान से सुनते नहीं। सुनते हुए जैसे कि नहीं सुनते हैं। सुनने से कोई फ़र्यदा है नहीं। फ़र्यदा सुनना है। पर भी वच्चे आते हैं। हुनरे आये हैं जैसे सुना नहीं। इसलिये पर सुनाने आता ही नहीं। वाप के संग मैं वह स्फूर्ति कर हो जाती है। नशा रहता है हर बहुत अंच गवर्नेंट है। हम गर्मेस्ट्र, गवर्नेंट से जीने रहें। अपील करें। अच्छा नहीं लगता। तुम फिरै लहै हो। उन से जीने का टूकड़ा भी कोई नामते हो। हर विश्व के भालेक के वच्चे हैं। सभी कुछ हमको वापसे मिलता है। जीने आदे को बात भी बाबा को आखिर मैं नहीं आती। बिनशा होने वाली गवर्नेंट से हर क्या नैगे। उनको हर रोजस्टरी र्कार्ड, आखिर मैं ही नहीं आता। बन्दरों से जीने बांगे। खुद भीख भी गँव रहे हैं। उन से हमारे वच्चे जीने नैगे। जोर मे नशा आ जाता है। जितना नजदीक डतना हो नशा चढ़ता है। हर तो पाण्डव गवर्नेंट हैं। वह हे अब कोरबगवर्नेंट। दिनशा काल विपरीत बुध है। अब बार आदे मैं कितना डालते हैं। तुम यूस लिख दो। तुमने तो यूना की है थेंक य देरी भुज। दस। दिल को कोई चौट नहीं लगनी चाहे। सुना ऐसे किन सुना हो। चौट क्या लगे। भैक्षण न भैक्षण हो जो दीना है। हासा पुरुषार्थ नौ अना ही है। ऐसे गहिरी —

इशा कह बैठ जावेगा। बच्चों को नशाहता है बाबा<sup>2</sup> को पढ़ाते हैं। बाप तो नई दुनिया नई नालैज ही देते हैं। और कोई के पास यहनालैज होती ही नहीं। मनुष्य जो धूम्र है उनको भी जरा नालैज नहीं है। तुम ब्राह्मणों में सी नम्बरवार है। विकर्म होने से फिर वह धरणा भी ख़बर हो जाते हैं। सुनते हैं चढ़ते हैं। फिर कुछ दिया तो गिर एड़ते हैं। फिर उनकी शाणी में जासीर न रहता। जो दूसरे को कहेंगे देहीअभिभानी भव। खुद होगा ही नहीं। तो उनको पंडित कहेंगे। अपन को शरीर समझना बिल्कुल संग है। यह है हो अनराइटियस दुनिया। वह है राइटियस दुनिया। वह है राइटियस दुनिया। इस लालैज से नई शुद्ध लर्ण। एवं शी और कोई है नहीं। न वैश्य है न ब्रह्मण है। न देवता। फिर तुम आवर ब्रह्मण बनते हो। बाप क्या समझते हैं इस पर विचार सागर अथन करना चाहिए। बहुत कहते हैं ब्रह्मा को तुम भगवान्कर्यों कहते हो। यह करते हो। और बाप खुद कहते हैं मैं पतित-शरीर के प्रवेश करता हूँ। उनका जूँ गुस्सा हो वह ठंडा कराए देना चाहिए। जूँ प्रवेश उनमें करना है जो नम्बरदान पतित है। समझाने काला भी अच्छा देहीअभिभानी होगा। इवह समझा सकेगी। देह-भीभन्नानी के पास धरणा होगी ही नहीं। इस समय जो तुम्हारी सर्विस चल रही है बिल्कुल स्वयुरेट। यह छ्याल न आना चाहिए। इतनी भेहनत को कोई निकला नहीं। वही नहीं सर्विस होती है। प्रजा बहुत न रहा है। तुम बहुत सर्विस कर रहे हो। अभी बच्चे, अच्छी रीत सर्विस करते हैं। समझाने का शाँक है। समझाने विचार रह न सकेंगे। समझाने साथ श्री देहीअभिभानी हों तो घकावट भी न होगा। और गलांडाद घृटेंगा नहीं। इह अभिभान होने से बाले आदि खराब हो जाते हैं। अभी तो सभी पुस्तार्थी हैं ना। दड़ा धीर्घ से बैठ समझाना चाहिए। आज कल करते तो काल खा जावेगा। अच्छा गीठे 2 लिक्षीलधे लहानी बच्चों को याद प्यार गुडलाईट और नहस्ते।

→ रात्रिक्षतास 12-11-68 :-

\*\*\*\*\* कहाँ बैठे हो। तुम बच्चों की लात और तात है ही नई दुनिया जी।

और यह भी बच्चे जानते हैं हम 50000 वर्ष पहले वा कल्प पहले विश्वले फिर से श्रीनंते पर अपना देवी-धरणा स्थापन कर रहे हैं। इश्वन है ना। यह है इश्वरीय ऐश्वन। तुम्हें भी कन्वेट कर हिन्दुओं से देवता बनाना है। वह हिन्दुओं को प्रिश्चन बनाते हैं। बोधी बहुतों को बोधी बनाते हैं। यह फिर है इश्वरीय ऐश्वन। इश्वर तो खुद निराकार है। तुम बच्चों को पहले 2 निराकार बनाते हैं। अपन को अहंता ए ल्लौदह न समझो। खुद सुप्रीम परम अहंता। तुम हैं अहंता। तुम पार्ट बजाने आते हो। वह सदैव नहाँ रहते हैं इसलिये उनको पार अहंता कहा जाता है। पहले 2 तुम जानते हो हम घर जावेंगे। घर जाने की शिशान होती नहीं सिवाय इस समय के। तुम समझते हो स्वर्ग में तो पहले थोड़े होते हैं बाकी सभी चले जावेंगे शांतियां। तुम सत्युग से लेकर कहियुग अन्त तक पार्ट बजाते हो। पुरानी दुनिया में थे अभी तुम संगम पर हो। दस्तव में सभी संगम पर हो। है ही संगक का संवाद पर्स्तु उनको पता नहीं है। तुम जानते हो। बाप आते हा बीच में है। तो तुम अभी पर्स्तते हो पुरानी दुनिया का दिनहाँ नई दुनिय की स्थापना होनी है। संग, सभी के लिये पर्स्तु जानते नहीं हैं क्योंके आसुरी घत पर है। तुम जानते हो नई दुनिया बदल रही है। बाप ही यंगम युग पर चेज लगने आते हैं। अभी पुरानी दुनिया पूरी हो नहीं होनी है। तुम बच्चे नई दुनिया के हिंदै अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो। ब्राह्मण ही अपने लिये नई दुनिया स्थापन कर रहे हैं। अभी हम सो ब्राह्मण हैं। पास्त रे शुद्ध थे। दुनिया यही है। अभी तुम संगम युगपर पर्स्त हो रहे हो। जानते हो नई दुनिया स्थापन हो रही है। जैसे दो युग हैं देवी देवताओं के। मुख्य तीन घर कहें। यह है पाञ्चेशन। और इस्तानी बोधी प्रिश्चन। यह बाते तुम बच्चे ही जानते हो। और बाला बाप आया हुआ है। तुम भी सभी को झंडे दिखाते हो। बाप रस्ता बताने बाला, झंडे बाला। वह ऐक विचार समझते हैं भावित से हम भगवान को पावेंगे। भावित करते 2 भगवान गिलेंगा जो भूक्त देंगे। पर्स्त भावित में दुःख ज्ञान में मुख्य है। यह कोई भी नहीं जानते हैं। भूत गये हैं। इस जन्म को भी —